# नव वर्ष 2011 का बाबा जी का संदेश

माननीय प्यारे भाईयो, बहनों एवं मित्रों,

वर्ष 2010 समाप्त हो रहा है एवं 2011 हमारे द्वार पर दस्तक दे रहा है। आइए! आज हम विचार करें कि 2010 में क्या हमने कौम, समाज अथवा देश के लिए कोई नेक कार्य किया है? क्या आत्मा को परमात्मा से मिलाने के लिए कोई यत्न किया है? मैं आपका अति आभारी हूँ कि आपने मेरा जन्म दिवस बहुत चाव और खुशियों से शब्द एवं गीत गाकर मनाया तथा खाने-पीने का कार्यक्रम भी किया। गत वर्ष मैंने आपको संदेश दिया था कि किसी व्यक्ति के जीवन का हिस्सा बनकर अपने प्रिय का स्मरणीय जन्म दिवस मनाने का प्रयत्न कीजिए। आपने अपने प्रिय का जन्म दिवस पार्टी करके बहुत धूमधाम से मनाकर अपनी खुशी प्रकट की। आप की खुशी से मैं स्वयं भी बहुत खुश हूँ परन्तु मेरी हार्दिक खुशी इस में है कि आप मेरा जन्म दिवस रक्तदान करके मनायें। आप के दिये हुये रक्त से किसी व्यक्ति को नया जीवन मिल सकता है। इससे आपको इस जन्म में तो लाभ मिलेगा ही, अगले जन्म में भी मिलेगा। इसलिए आप मेरा जन्म दिवस रक्तदान शिविर लगाकर मनायें। मेरे विचार से अंगदान करना भी एक महान कार्य है। मृत्यु के बाद तो शरीर अग्नि के सुपुर्द हो जायेगा, मिट्टी में दफना दिया जायेगा अथवा जल प्रवाह कर दिया जायेगा। इससे आपको कोई फर्क नहीं पड़ेगा परन्तु आपके द्वारा दान किए हुए अंग से कोई इन्सान तन्दरुस्त होकर अच्छा जीवन जी सकेगा। इसका लाभ परमात्मा आपको अगले जन्म में भी देगा।

दुनिया में जितने भी महापुरुष आये हैं, उन्होंने कन्यादान को महादान कह कर ब्यान किया है परन्तु मैं समझता हूँ कि आजकल यह बहुत ही महँगा साबित होता जा रहा है। इसका कारण यह है कि महँगाई बहुत बढ़ चुकी है। क्या अमीर, क्या गरीब, लड़कियों की शादी करना सबके लिए एक दुर्गम घाटी चढ़ने के बराबर है और इसे उधार की सीढ़ी लेकर चढ़ना पड़ता है। उधार उतरता नहीं और परिवार की नैया डाँवाँडोल हो जाती है। इस कारण लोग भ्रूण हत्या की ओर चल पड़े हैं। भ्रूण हत्या महापाप है। इसके बारे में पिछले वर्ष के संदेश में भी मैंने विनती की थी। आज लड़कियाँ, लड़कों के कन्धे से कन्धा मिलाकर प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, स्पेस में घूमकर आ रही हैं। यदि इनकी भ्रूण हत्या हो जाती तो देश एक कीमती नगीना खो देता।

मुझे आगरा में दयाल बाग जाने का अवसर मिला। वहाँ की संस्था अपने प्रेमियों को लड़कियों की शादी में 15,000 से ज्यादा खर्च करने की

इजाज़त नहीं देती। अपनी सीमा के अनुसार इस पर रोक लगानी चाहिए। इस प्रकार यदि संगत इसमें सहयोग दे तो मैं भी इसे अपने दायरे में लागू करना चाहता हूँ। संगत और प्रेमी भी ऐसा चाहते हैं पर यदि लड़के वाले ना मानें तो मुश्किल हो जाती है।

इन्सान को परमात्मा ने अश्रफ-उल-मख्लूकात बनाया है। हमें कुल मालिक परमात्मा का ज्ञान लेकर भजन-सिमरन करके उससे जुड़ने की कोशिश करनी चाहिए। इन्सान के जामे की यही एक विशेषता है कि वह ज्ञान लेकर परमात्मा से मिल सकता है। श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने जीते जी मरने का जो तरीका बतलाया है, उसे जानने की कोशिश करनी चाहिए और मरने के बाद जहाँ जाना है, उसके बारे में विचार करना चाहिए। फिर हम इन्सान कहलाने के हकदार हो सकते हैं। नहीं तो कौन से काम जानवर नहीं करते जो इन्सान करता है। अन्य योनियाँ जैसे जानवर, पक्षी आदि भोग भोग सकते हैं, बच्चे पैदा करके उन्हें चलने-फिरने और उड़ने के काबिल बना सकते हैं। जिस चीज की विशेषता परमात्मा ने हमें बख्शी है, उसे हमने इस्तेमाल नहीं किया, प्रैक्टीकली उसे अपनाया नहीं तो जन्म बेकार चला जायेगा। इसलिए हमें सन्त-महात्माओं की सोहबत और नाम की प्राप्ति करके भजन-सिमरन के द्वारा परमात्मा को मिलने का प्रयत्न करना चाहिए और मनुष्य जन्म को सफल बनाना चाहिए।

परमात्मा यदि ताकत बख्शे तो इन्सान को हौमैं में नहीं आना चाहिए। शेख सादी एक बहुत बड़े बादशाह का शायर था। उसका बेटा दोस्तों में अपने बाप का नाम लेकर रोब जमाता था, हौमैं प्रकट करता था। शेख सादी ने उससे कहा, तुम मेरा नाम लेकर रोब जमा रहे हो। जब तुम अल्लाह की दरगाह में खड़े होगे, वहाँ तुम्हारे हाथ फैले हुये होंगे, तुम गिड़गिड़ा रहे होगे, कोई तुम्हारी मदद के लिए नहीं होगा। किये हुये कर्म तुम्हारे साथ होंगे, वही तुम्हारे काम आयेंगे। वहाँ शेख सादी का रोब या सिफारिश नहीं चलेगी। इसलिए उसकी रजा में रहकर काम करना चाहिए।

आपका

(केहर सिंह)